Agreements between India and USA in power sector

785. SHRI V. HANUMANTHA RAO:
SHRI SANJAY DALMIA:

Will the Minister of POWER be pleased to state:

(a) the details pertaining to the nature, limit and extension of the major official agreements signed between India and USA during 1994 in the power sector;

(b) whether implementation of these bilateral agreements would adversely affect public sector undertakings like BHEL, NTPC, NHPC etc. or any other domestic organisation; and

(c) if so, the steps proposed to counter them?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF POWER (SHRIMATI URMILABEN CHIMANBHAI PATEL): (a) Four Statements of Intent to cooperate in the fields of energy efficiency, fossil energy, renewable energy and environment enhancing energy technologies and a Memorandum of Understanding for periodic consultations in the power sector between the Government of India and the Government of USA were signed during 1994. The Statements of Intent provide for their coming into effect after the conclusion of an Agreement between the Government of India and the Government of USA on cooperation in Science and Technology.

(b) There is no likelihood of any consequential adverse effect on BHEL, NTPC, NHPC etc. of these Statements of Intent or the Memorandum of Understanding.

(c) Does not arise.

भारतीय रिजर्व बैंक से ली गई उधार-राशियां

786. **श्री सोमपाल:** क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह बात सही है कि चालू वर्ष में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भारत सरकार को दिये गये शुद्ध ऋण की राशि बढ़ रही है;

(ख) गत पांच वर्षों में भारत सरकार द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक से लिए गये ऋणों की स्थिति क्या रही है;

(ग) पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष ऋणों में कितने प्रतिशत वृद्धि हुई है और इसके मुख्य कारण क्या हैं;

(घ) भारतीय रिजर्व बैंक से लिये गये ऋणों की इस प्रकार की वृद्धि का देश की अर्थव्यवस्था एवं सरकार की वित्तीय स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ता है;

(ङ) इस संबंध में क्या उपाय किये जा रहे हैं; और

(च) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० देबीप्रसाद पाल): (क) जी, हां।

(ख) पिछले पांच वर्षों के दौरान सरकार को निवल रिजर्व बैंक ऋण (एन०आर०सी०जी०) में हुई वृद्धि नीचे दी गई है:—

वर्ष	राशि
	(करोड़ रुपए में)
1990-91	15165
1991-92	5168
1992-93	4433
1993-94	851
1994-95	2178

(ग) चालू वित्तीय वर्ष में 10 नवम्बर, 1995 तक एन०आर०सी०जी० में 16.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि 1994-95 की तदनरूप अवधि के दौरान यह 3.2 प्रतिशत कम थी।

(घ) से (च) अर्थ व्यवस्था और वित्तीय स्थिति पर सरकार को निवल भारतीय रिजर्व बैंक ऋण में वृद्धि का प्रभाव सामान्यतः मुद्रा आपूर्ति (एम 3) की वृद्धि में इसके अंशदान के जरिए पड़ता है। तथापि एन०आर०सी०जी० मुद्रा आपूर्ति (एम० 3) के अनेक स्रोतों में से केवल एक है तथा एम 3 पर पड़ने वाला निवल प्रभाव एक साथ लिए गए सभी स्रोतों पर निर्भर करता है। बदले में मुद्रा आपूर्ति (एम 3) उत्पादन,